

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्रीमद्भागवते प्रथमस्कन्धे कृती कृता
॥ श्री कृष्णस्तुतिः ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ श्री कृष्णस्तुतिः ॥

कुन्त्याराच

नमस्ये पुरुषं वराहद्वयमीश्वरं प्रकृतेः परम्।
अलक्ष्यं सर्वभूतानामन्तर्बहिरस्थितम् ॥ 1 ॥

मायाजरनिकाच्छन्नमञ्जाधोक्कजमर्ययम्।
न लक्ष्यसे मूढदृशा नटो नाट्यधरो यथा ॥ 2 ॥

तथा परमहंसानां मुनीनाममलात्मनाम्।
भक्तियोगरिधानार्थं कथं पश्येमहि स्त्रियः ॥ 3 ॥

कृष्णाय रासुदेराय देवकीनन्दनाय च।
नन्दगोपकुमाराय गोरिन्दाय नमो नमः ॥ 4 ॥

नमः पङ्कजनाभाय नमः पङ्कजमालिने।
नमः पङ्कजनेत्राय नमस्ते पङ्कजाङ्घ्रये ॥ 5 ॥

यथा हृषीकेश खलेन देवकी
कंसेन रुद्धातिचिरं शुचार्पिता।
रिमोचिताहं च सहात्मजा रिभो
वरैर नाथेन मुहूर्तिपदगणां ॥ 6 ॥

रिषान्महाग्नेः पुरुषाददर्शनां
असंसभाया रनरासकृच्छ्रतः।
मूधे मूधेहनेकमहारथाञ्जतो
द्रौण्यञ्जतश्चास्य हरेहभिरम्बिताः ॥ 7 ॥

রিপদঃ সন্তু নঃ শশ্বত্তত্র তত্র জগদুরো।
ভরতো দর্শনং যৎস্যাদপুনর্ভরদর্শনম্ ॥ 8 ॥

জনৈশ্বর্যশ্রুতশ্রীভিরেধমানমদঃ পুমান্।
নৈরাহত্যভিধাতুং রৈ ংরামকিঞ্চনগোচরম্ ॥ 9 ॥

নমোহকিঞ্চনরিত্রায় নিরুত্তগুণরুত্তয়ে।
আত্মারামায় শান্ত্রায় কৈরল্যপতয়ে নমঃ ॥ 10 ॥

মন্যে ংরাং কালমীশানমনাদিনিধনং রিভুম্।
সমং চরন্তং সর্ত্র ভূতানাং যন্মিথঃ কলিঃ ॥ 11 ॥

ন রেদ কশ্চিদ্ভগরংশিকীর্ষিতং
তরেহমানস্য নৃণাং রিডম্বনম্।
ন যস্য কশ্চিদ্দযিতোহস্তি কহিঁচিৎ
দ্রেষ্যশ্চ যন্মিন্ রিষমা মতিনৃণাম্ ॥ 12 ॥

জন্ম কর্ম চ রিশ্বরাঅন্নজস্যাকর্তুরাঅনঃ।
তির্যঙনৃষিষু যাদস্সু তদত্যন্তরিডম্বনম্ ॥ 13 ॥

গোপ্যাদদে ংরযি কৃতাগসি দাম তারৎ
যা তে দশাশ্রুকলিলাঞ্জনসম্ভ্রমাক্ষম্।
রক্ত্রং নিনীয ভযভারনযা স্থিতস্য
সা মাং রিমোহযতি ভীরপি যদ্বিভেতি ॥ 14 ॥

কেচিদাহরজং জাতং পুণ্যশ্লোকস্য কীর্তযে।
যদোঃ প্রিযস্যান্নরাযে মলযস্যেয় চন্দনম্ ॥ 15 ॥

অপরে রসুদেরস্য দেরক্যাং যাচিতোহভ্যগাৎ।
অজস্তুমস্য ক্ষেমায রধায চ সুরদ্বিষাম্ ॥ 16 ॥

ভারাতারণাযান্যে ভুরো নার ইরোদধৌ।
সীদন্ত্যা ভূরিভারেণ জাতো হ্যাঅ্ভুরার্থিতঃ ॥ 17 ॥

ভরেহস্মিন্ ক্লিশ্যমানানামরিদ্যাকামকর্মভিঃ।
শ্ররণস্মরণার্হাণি করিষ্যন্মিতি কেচন ॥ 18 ॥

শৃংস্তি গায়ন্তি গৃণন্ত্যভীক্ষশঃ
স্মরন্তি নন্দন্তি তরেহিতং জনাঃ।
ত এর পশ্যন্ত্যচিরেণ তারকং
ভরপ্ররাহোপরমং পদাম্বুজম্ ॥ 19 ॥

অপ্যদ্য নস্ত্বং স্বকৃতেহিত প্রভো
জিহাসসি স্মিৎসুহৃদোহনুজীরিনঃ।
যেষাং ন চান্যদ্রতঃ পদাম্বুজাৎ
পরাযণং রাজসু যোজিতাংহসাম্ ॥ 20 ॥

কে রযং নামরূপাভ্যাং যদুভিঃ সহ পাওরাঃ।
ভরতোহদর্শনং যর্হি হৃষীকাণামিরেশিতুঃ ॥ 21 ॥

নেযং শোভিষ্যতে তত্র যথেদানীং গদাধর।
ৎরৎপদৈরঙ্কিতা ভাতি স্বলক্ষণরিলক্ষিতৈঃ ॥ 22 ॥

ইমে জনপদাঃ স্ফুদ্রাঃ সুপক্লেষধিরীরুধঃ।
রনাদ্রিনদ্যদন্ত্রস্তো হ্যেধন্তে তর বীক্ষিতৈঃ ॥ 23 ॥

অথ রিশ্বেশ রিশ্রাত্মনিশ্রমূর্তে স্বকেষু মে।
স্নেহপাশমিমং ছিঙ্কি দৃঢং পাণ্ডুষু বৃষ্টিষু ॥ 24 ॥

ৎরযি মেহনন্যরিষযা মতির্মধুপতেহসকৃৎ।
রতিমুদ্রহতাদন্ধা গঙ্গেরৌঘমুদন্ত্রতি ॥ 25 ॥

শ্রীকৃষ্ণ কৃষ্ণসখ বৃষ্ণ্যষভারনিধু -
গ্রাজন্যরংশদহনানপরগরীয।
গোরিন্দ গোদ্বিজসুরার্তিহরারতার
যোগেশ্বররাখিলগুরো ভগবন্নমস্তে ॥ 26 ॥

॥ ইতি শ্রী কৃষ্ণস্তুতিঃ সমাপ্তা ॥